ALIF LAAM MEEM
A PUBLICATION OF
MS RESEARCH FOUNDATION

हिंदी सीखो

पाठमाला

१

TERM - 1

एकीकृत मूल्य आधारित पाठ्यक्रम
MFERD
मिल्लत फ़ाउंडेशन
फ़ॉर एजूकेशन रिसर्च एंड डेवलपमेंट

रेखांकरण

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के परिच्छेद

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा २००५ का संग्रहित विश्लेषण

यह एक तथ्य है कि शिक्षा प्राप्ति के जो तरीक़े अपनाए गए हैं वे छात्रों एवं माता-पिता पर बोझ बनते जा रहे हैं। इस लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा २००५ ने पाँच मार्गदर्शक नियमों का प्रस्ताव प्रस्तुत किया है।

(i) शिक्षा को पाठशाला के बाहर की दुनिया से जोड़ना ।
(ii) सीखते समय रटने की विधि के हटाने को सुनिश्चित बनाना।
(iii) पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त पाठ्यक्रम की समृद्धि
(iv) परीक्षा को लचकदार बनाना और कक्षा को जीवन से जोड़ना
(v) संवेदना पूर्ण पोषण एवं चिन्ताशील लोकतंत्र की सुरक्षा के लिए पहचान बनाना।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा २००५ शिक्षात्मक दृष्टि से।

एक बहुसांस्कृतिक समाज को शिक्षा, मूल्य, मानवता सहनशीलता तथा शांति को बढ़ावा देने योग्य होना चाहिए। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा के भीतर एक ऐसा ढांचा तत्पर किया गया है जो अध्यापकों और पाठशालाओं के अनुभव को प्रयोग में लाते हुए छात्रों की सोच के अनुरूप हो।

इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए पाठ्यक्रम अनुभव के आधार पर तैयार होना चाहिए। परन्तु इस के मुख्य प्रश्न कुछ इस प्रकार हैं।

(i) क्या पाठशाला शिक्षात्मक उद्देश्य को वांछित रूप से पूरा करने का प्रयास कर रहा है?
(ii) शिक्षात्मक उद्देश्य की प्राप्ति हेतु क्या अवलोकन किया जाना चाहिए।
(iii) इन शिक्षात्मक अवलोकनों को भाववाहक ढंग से किस प्रकार संगठित बनाया जा सकता है?
(iv) वांछित शिक्षात्मक उद्देश्य के समापन को किस प्रकार सुनिश्चित बनाया जाए?

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूप रेखा २००५ के शिक्षात्मक मार्गदर्शक नियम

बढ़ती आयु के साथ-साथ बालक अपने वातावरण से प्राकृतिक रूप से भिन्न कौशल प्राप्त कर लेते हैं। इस के अतिरिक्त वे अपने आस-पास के वातावरण और जीवन का भी अनुसरण करते हैं। जब वे कक्षा में प्रवेश करते हैं तो उन के प्रश्न पाठ्यक्रम को स्थिर और अधिक रचनात्मक बना सकते हैं। ऐसे सुधार स्वीकृत पाठ्यक्रम नियमों के चलन में सहायक होते हैं जो ज्ञात से अज्ञात, तथ्य से कल्पना तथा क्षेत्रीय से वैश्विक की ओर ले जाते हैं।

एम एफ़ ई आर डी की पुस्तकें राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूप रेखा के मार्गदर्शक नियमों पर तैयार की गई हैं। हम चाहते हैं कि NCF की ओर से बनाए गए शिक्षात्मक उद्देश्य के कार्यान्वयन में न केवल हमारे छात्र अपनी पूर्ण भूमिका निभाएँ बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में ईमानदार तथा उत्तरदायी नागरिक बनें । हम गंभीरता एवं विश्वास के साथ इस पाठ्यक्रम पर चले तो छात्रों का व्यक्तित्व निखरेगा जो आगे चल कर दूसरों के लिए सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शन सिद्ध होगा।

एम.एफ़.ई.आर.डी के दृष्टिकोण को जानने हेतु कृपया आप पुस्तक के पिछले पृष्ठ का अध्ययन करें।

परिचय

मिल्लत फ़ाउंडेशन फॉर एजूकेशन रिसर्च एंड डेवलपमेंट एक संगठन है जो प्रसार, समन्वय, सहयोग, सहकारिता एवं मुस्लिम शैक्षिक संस्थाओं को एक सार्वजनिक मंच प्रदान करने हेतु स्थापित किया गया है। इस प्रकार इस्लामी संविधान की सीमाओं में रहते हुए शैक्षिक मैदान में व्यक्तिगत एवं संस्थाओं द्वारा उत्कृष्टता प्राप्त करना है।

एम.एफ.ई.आर.डी का उद्देश्य शोध एवं विकास के माध्यम से भिन्न प्रकार की ऐसी चुनौतियों को संबोधित करना एवं उनका समाधान खोजना है जिनका शैक्षिक संगठन सामना कर रहे हैं। इस का एक प्रमुख कार्यक्रम पाठशाला तथा विद्यालय के लिए मूल्य पर आधारित पाठ्यक्रम तत्पर करना है जो भविष्य की पीढ़ी को विशिष्टता के लिए तैयार कर सके।

पाठ्यक्रम सीखने एवं अनुभव करने हेतु जिस के माध्यम से छात्र शिक्षाविदों, गतिविधियों, सीखने के वातावरण, मूल्यांकन, पारस्परिक वार्तालाप जैसे समूह कार्य छात्र अध्यापकों के साथ पाठशाला में प्रवेश के पश्चात से बाहर आने तक करता है। कई वर्ष बच्चे के मनोविज्ञान, शिक्षा में इस्लामी परिप्रेक्ष्य एवं भिन्न पाठ्यक्रमों की समीक्षा के पश्चात् एम.एस रिसर्च फ़ाउंडेशन ने मूल्य पर आधारित पाठ्यक्रम बनाया है जो राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढांचे एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के अनुकूल है। यह बच्चों के संपूर्ण विकास, स्वयं की पहचान, समय की आवश्यकता तथा उस को भविष्य का मार्ग-दर्शक बनाने में सहयोग देगा।

निम्नलिखित पर आधारित

- उद्देश्य इस्लाम, मनोविज्ञान, शिक्षा तथा हितैशियों के अनुसार।
- पाठ्य-विवरण आयु तथा सरकारी स्तर के अनुकूल।
- कार्यप्रणाली जो छात्र केंद्रित तथा विषय के उपयुक्त साधन में अध्यापकों का प्रशिक्षण, शिक्षण में सहयोगी सामग्री एवं शिक्षक का मार्ग-दर्शन शामिल है।

- मूल्यांकन - रचनात्मक, योगात्मक, स्वयं, सह-शैक्षिक, व्यवहारवादी एवं दीर्घकालिक।
- गतिविधियाँ - पाठ्यक्रमिक, सह-पाठ्यक्रमिक तथा अतिरिक्त पाठ्यक्रमिक, आयोजन के लिए दिशा निर्देशन के साथ।
- समय बद्धता - तिथिपत्र, दिन-वर्ष की योजना, काम का बोझ, अवधि विभाजन तथा प्रतियोगिताएँ।
- अवलोकन - प्रतिक्रिया एवं अनुसंधान।

सेन्ट्रल अकेडमी फ़ॉर रिसर्च एंड डेवलपमेंट (CARD)

(केन्द्रित प्रशिक्षण शाला विकास एवं शोध खंड) की स्थापना परियोजना बनाने, प्रशिक्षण देने तथा विभिन्न पाठशालाओं के सभी स्तरों पर पाठ्यक्रम के कार्यान्वयन के निरीक्षण हेतु की गई है।

विषय - सूची

क्रम.	पाठ का नाम	पृष्ठ संख्या
1)	वर्णमाला (स्वर अक्षर) ----------5 – 18	
	स्वर अक्षर (कविता) केवल पठन हेतु	19
2)	व्यंजन अक्षर एवं संयुक्ताक्षर---------20 – 52	
3)	दो और तीन अक्षर वाले शब्द----	53 – 56
4)	अच्छी आदतें ----------	57 – 60
5)	चार अक्षर वाले शब्द---------	61
	अनमोल सीख (पाठ) केवल पठन हेतु	62 – 63
6)	स्वरों की मात्राएँ----------	64 – 68

भाषा की योग्यता और कौशल

क्रम.स.	विषय	सुनना बोलना और पढ़ना	लिखित कार्य	गतिविधियाँ	सीख	व्याकरण
1.	वर्णमाला (स्वर अक्षर)	स्वर अक्षरों की परिभाषा सहित अक्षर को उचित स्वर में पढ़ना एवं छात्रों से पढ़वाना।	स्वर अक्षर को उचित रूप से आकार देकर सही ढंग से लिखना सिखाना एवं अभ्यास कराना।	छात्रों से फल, फूल एवं जानवरों के नाम, उन्ही अक्षरों को बोलकर अभ्यास कराना।	हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है।	
	स्वर अक्षर (कविता) केवल पठन हेतु	अक्षरों की पहचान और उच्चारण सीखेगा।		कविता को आरोह-अवरोह के साथ पढ़ना सीखेगा ।	स्वर अक्षर को आत्मसात करेगा।	
2	व्यंजन अक्षर एवं संयुक्ताक्षर	व्यंजन अक्षरों की परिभाषा एवं व्यंजनों का वर्गीकरण संयुक्ताक्षर क्ष, त्र, ज्ञ, श्र की परिभाषा, दो अक्षरों के मिलने से एक नया अक्षर बनना और उचित ध्वनियों में अक्षरों का उच्चारण करना।	व्यंजन अक्षरों को उचित रूप से वर्गों में विभक्त कर लिखना एवं अभ्यास कराना। संयुक्ताक्षरों का ज्ञान कराना, लिखित कार्य एवं अभ्यास पर बल।	अवलोकन, वर्णों तथा उनसे जुड़े संकेतों की पहचान कराना। अक्षरों को जोड़कर विभिन्न संयुक्त अक्षरों का ज्ञान कराना।	एक से अधिक भाषाओं का ज्ञान लाभदायक है। बालकों को बताना कि, एकता में बल है।	व्यंजनों की ध्वनि पर बल, ऊष्ण/शीतल ध्वनि निकालने का आदेश। संयुक्ताक्षर का ज्ञान।
3	दा और तीन अक्षर वाले शब्द	अक्षरों को जोड़कर शब्द बनाना, ऊँचे स्वर में बोलकर अभ्यास कराना, मौखिक अभिव्यक्ति का कौशल बढ़ाना।	दो, तीन एवं चार अक्षरों को जोड़कर शब्द तथा वाक्य बनाना एवं लिखने का अभ्यास कराना।	अवलोकन आसपास की चीज़ों से जोड़कर शब्द बनाना एवं वाक्य बनाना।	अक्षरों को जोड़ना, अलग करना सीखेगा।	शब्द रचना एवं वाक्य रचना का ज्ञान कराना।
4	अच्छी आदतें	अक्षरों को जोड़कर शब्द बनाना।	शब्दार्थ, प्रश्नोत्तर, रिक्त स्थान।	एक अक्षर का प्रयोग कर कई शब्द बनाना।	शब्दों की रचना एवं वाक्य रचना सिखाना। अच्छी आदतों की सीख।	शब्द एवं वाक्य की रचना और उसका उपयोग।
5	चार अक्षर वाले शब्द	अक्षरों को जोड़कर शब्द बनाना, ऊँचे स्वर में बोलकर अभ्यास कराना, मौखिक अभिव्यक्ति का कौशल बढ़ाना।	चार अक्षरों को जोड़कर शब्द तथा वाक्य बनाना एवं लिखने का अभ्यास कराना।	अवलोकन आसपास की चीज़ों से जोड़कर शब्द बनाना एवं वाक्य बनाना।	चार अक्षर को जोड़कर पढ़ना और लिखना सीखेगा।	चित्र की सहायता से शब्द बनाना सीखेगा।
	अनमोल सीख (केवल पठन हेतु)	चित्र के नाम, उसकी पहचान एवं वाक्य द्वारा पढ़ना सीखेगा।	-	-	-	वाचन अभिव्यक्ति सीखेगा।
6	स्वरों की मात्राएँ	स्वर और मात्रा की परिभाषा जानेगा।	मात्राओं का लिखित अभ्यास।	मात्रा पहचान कर अक्षर से मात्रा को मिलाना सीखेगा।	मात्राओं की सहायता से वाक्य बनाना सीखेगा।	व्यंजन अक्षर को पहचान कर रंग भरेगा।

चित्र का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

अध्यापन संकेत

चित्र वर्णन करने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित कीजिए।

माता-पिता और बड़ों की सेवा एवं उनके आज्ञा-पालन पर कुछ वाक्य बताइए।

नीचे मस्जिद का दृश्य दिखाया गया है। बताइए कौन क्या कर रहे हैं?

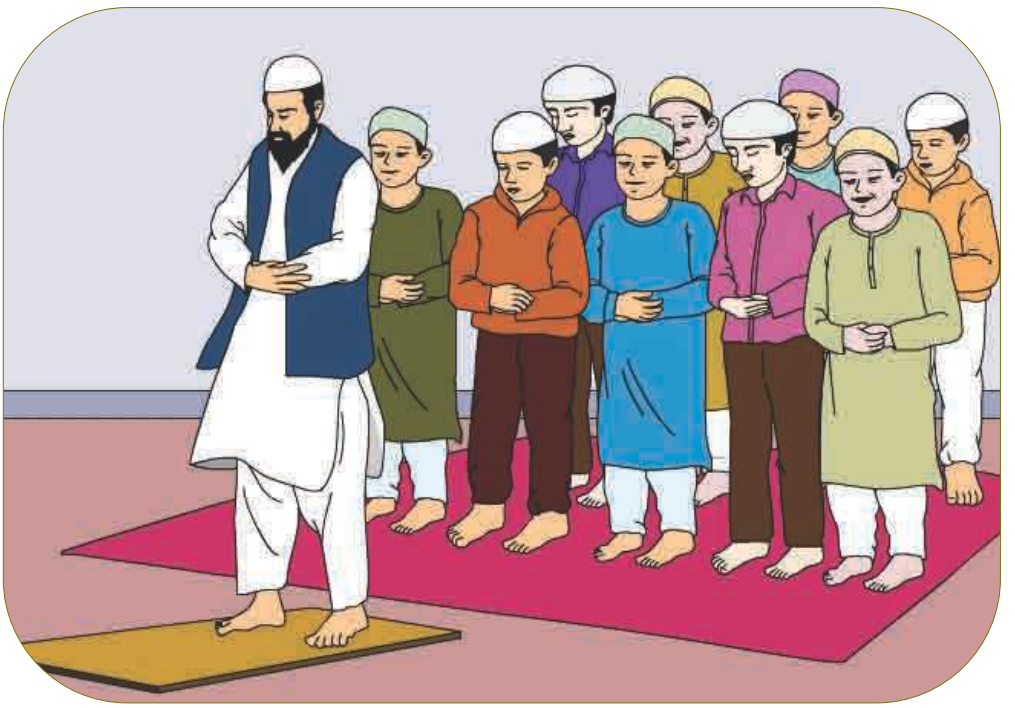

अध्यापन संकेत

चित्र वर्णन करने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित कीजिए।

चित्र का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

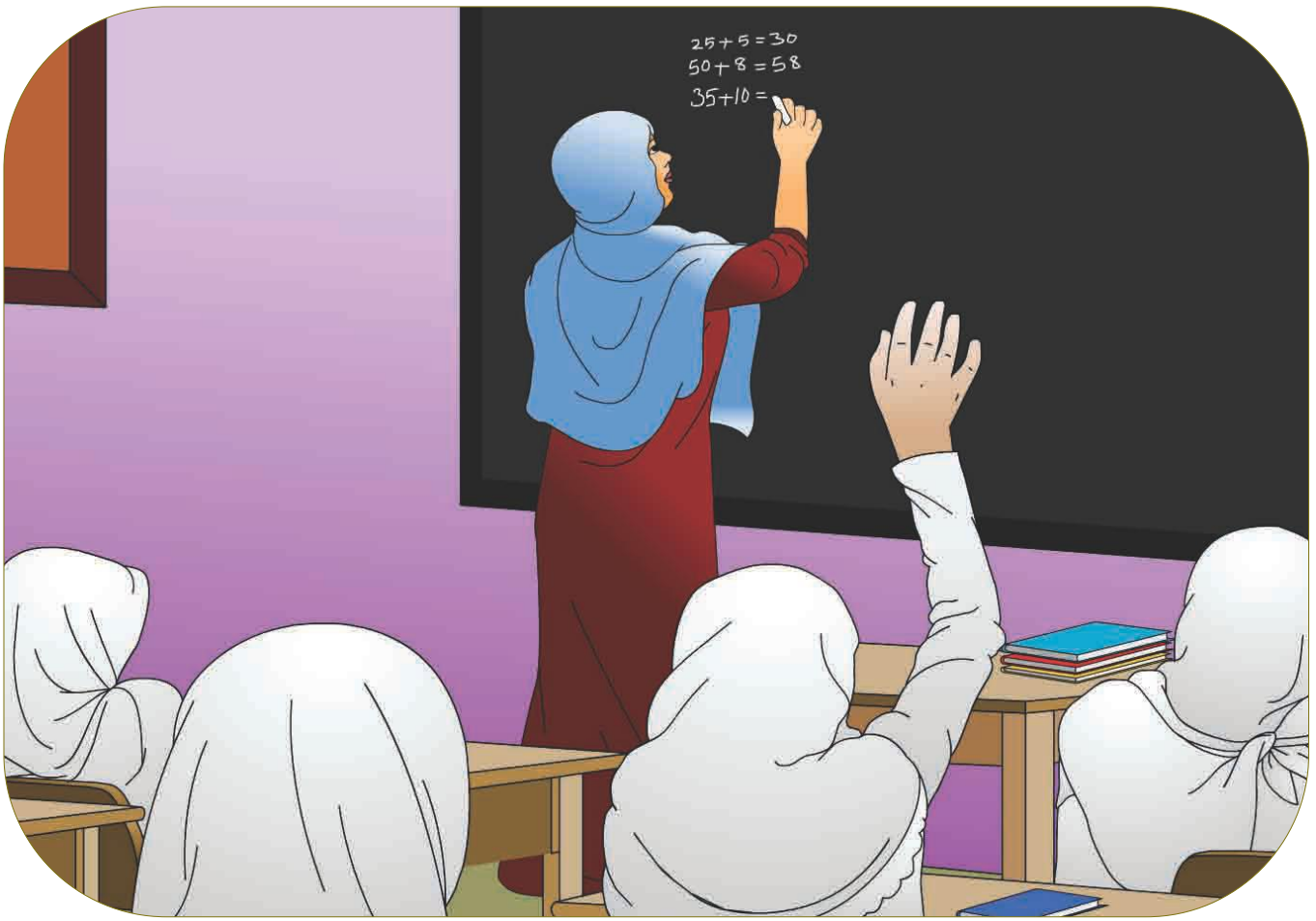

अध्यापन संकेत

चित्र वर्णन करने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित कीजिए ।

चित्र द्वारा विद्या का महत्व बताते हुए छात्रों को समझाएँ।

अध्यापन संकेत

'अ' स्वर अक्षर का पहला अक्षर है। 'अ' का अभ्यास ठीक उच्चारण द्वारा बोल कर करवाएँ।'अ' को समझाने के लिए 'अ' के विभिन्न अच्छे शब्द बोल कर अभ्यास कराया जाए। जैसे- 'अ' से 'अल्लाह'।

'आ' यह स्वर अक्षर है। यह 'दीर्घ' है। इसे थोड़ा खींचकर तेज़ ध्वनि में पढ़ें।
'आ' से विभिन्न शब्दों को बोल-बोल कर अभ्यास कराया जाए।

'इ' यह स्वर अक्षर है। यह हस्व है। 'इ' को जल्दी पढ़ा जाता है। 'इ' के विभिन्न शब्दों से 'इ' की ध्वनि का ज्ञान कराया जाए।

'ई' यह स्वर अक्षर है। यह 'दीर्घ' अक्षर है। इसे थोड़ा खींचकर ऊँचे स्वर में उच्चारण कराया जाए। 'ई' से संबंधित अनेक शब्दों का उच्चारण ऊँचे स्वर में कराया जाए।

'उ' यह स्वर अक्षर है। यह 'हस्व अक्षर' है। इसे जल्दी पढ़ा जाता है। 'उ' से संबंधित विभिन्न शब्दों का उच्चारण ऊँचे स्वर में कराया जाए।

'ऊ' यह स्वर अक्षर है। यह दीर्घ अक्षर है। इसका उच्चारण ऊँची ध्वनि में खींचकर किया जाता है।

'ऊ' से विभिन्न शब्द बोल-बोल कर अभ्यास कराया जाए।

'ऋ' इस का उच्चारण स्थान मूर्धा है। 'ऋ' अक्षर का ऊँचे स्वर में उच्चारण करें और बच्चों से दोहराने के लिए कहें। 'ऋ' से शुरू होने वाले विभिन्न शब्दों को बोल कर अभ्यास कराया जाए।

'ए' यह स्वर अक्षर है। 'ए' अक्षर का उच्चारण ऊँची ध्वनि में करें एवं छात्रों को दोहराने का आदेश दें। 'ए' से विभिन्न शब्द बोल कर अभ्यास कराया जाए।

'ऐ' यह स्वर अक्षर है। 'ऐ' अक्षर का उच्चारण ऊँचे ध्वनि में करें एवं छात्रों को दोहराने का आदेश दें। 'ऐ' से विभिन्न शब्द बोल कर अभ्यास कराया जाए।

'ओ' यह स्वर अक्षर है। इसकी ध्वनि अंग्रेज़ी अक्षर 'o' के समान निकलती है । इसका उच्चारण ऊँचे स्वर में कराया जाए। 'ओ' के विभिन्न शब्द बोल कर अभ्यास कराया जाए।

'औ' यह स्वर अक्षर है, इसका अभ्यास ठीक उच्चारण में ऊँचे स्वर में बोल कर कराया जाए।
'औ' से संबंधित विभिन्न शब्दों का अभ्यास कराया जाए।

'अं' यह अनुस्वार है, इसका उच्चारण स्थान नासिका है। छात्रों को अं से शुरू होने वाले विभिन्न शब्दों का उच्चारण ऊँचे स्वर से बोल कर अभ्यास कराया जाए। प्रत्येक वर्ण का ऊँचे स्वर में उच्चारण करें और बच्चों से दोहराने के लिए कहें।

'अः' यह विसर्ग है। इसका उच्चारण स्थान गला है। छात्रों को 'अः' से शुरू होने वाले विभिन्न शब्दों का उच्चारण ऊँचे स्वर में बोल कर कराया जाए। हर एक वर्ण से संबंधित चित्रों के बारे में रोचक प्रश्न पूछें।

1 वर्णमाला (स्वर अक्षर)

भाषा की वह सब से छोटी इकाई जिसे तोड़ा नहीं जा सकता उसे वर्ण कहते हैं।

वर्णमाला: वर्णों का क्रमबद्ध समूह ही वर्णमाला कहलाता है।

हिंदी में वर्णमाला को मुख्यतः तीन भागों में बाँटा गया है।

वर्णमाला

स्वर अक्षर	व्यंजन अक्षर	संयुक्त अक्षर
(अ - औ)	(क-ह)	(क्ष,त्र,ज्ञ,श्र)

स्वर: जिन ध्वनियों को लिखने अथवा बोलने के लिए किसी अन्य ध्वनि तथा अक्षर की सहायता की आवश्यकता नहीं होती उन्हें स्वर अक्षर कहते हैं। यह स्वतंत्र है।